SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

शासकीय एवं अशासकीय महाविद्यालय में बी. एड. प्रशिक्षार्थियों का शैक्षिक रूचि पर एक अध्ययन

बबली यादव, एम.एड. शोधार्थी, शिक्षा संकाय,
प्राची भट्ट, शिक्षा संकाय,
प्रगति महाविद्यालय, चौबे कालोनी, रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Authors

बबली यादव, एम.एड. शोधार्थी, शिक्षा संकाय,
प्राची भट्ट, शिक्षा संकाय,
प्रगति महाविद्यालय, चौबे कालोनी,
रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 20/07/2022
Revised on : -----
Accepted on : 27/07/2022
Plagiarism : 09% on 21/07/2022

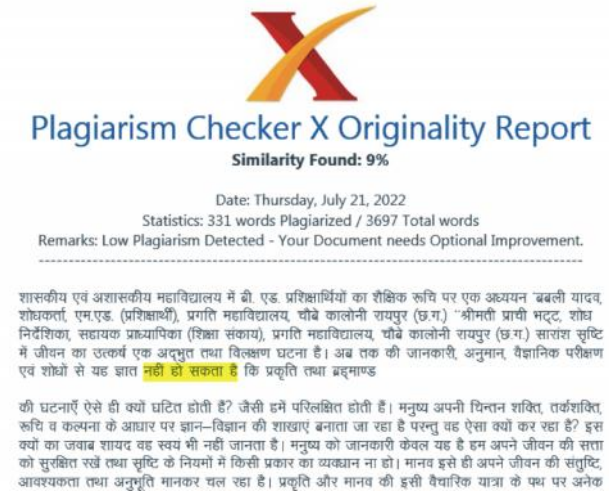

Plagiarism Checker X Originality Report
Similarity Found: 9%

Date: Thursday, July 21, 2022
Statistics: 331 words Plagiarized / 3697 Total words
Remarks: Low Plagiarism Detected - Your Document needs Optional Improvement.

शासकीय एवं अशासकीय महाविद्यालय में बी. एड. प्रशिक्षार्थियों का शैक्षिक रूचि पर एक अध्ययन बबली यादव, शोधकर्ता, एम.एड. (प्रशिक्षार्थी), प्रगति महाविद्यालय, चौबे कालोनी रायपुर (छ.ग.) श्रीमती प्राची भट्ट, शोध निर्देशिका, सहायक प्राध्यापिका (शिक्षा संकाय), प्रगति महाविद्यालय, चौबे कालोनी रायपुर (छ.ग.) सारांश सृष्टि में जीवन का उत्कर्ष एक अद्भुत तथा विलक्षण घटना है। अब तक की जानकारी, अनुमान, वैज्ञानिक परीक्षण एवं शोधों से यह ज्ञात नहीं हो सकता है कि प्रकृति तथा ब्रह्माण्ड

की घटनाएँ ऐसे ही क्यों घटित होती हैं? जैसी हमें परिलक्षित होती हैं। मनुष्य अपनी चिन्तन शक्ति, तर्कशक्ति, रूचि व कल्पना के आधार पर ज्ञान–विज्ञान की शाखाएं बनाता जा रहा है परन्तु वह ऐसा क्यों कर रहा है? इस क्यों का जवाब शायद वह स्वयं भी नहीं जानता है। मनुष्य को जानकारी केवल यह है हम अपने जीवन की सत्ता को सुरक्षित रखें तथा सृष्टि के नियमों में किसी प्रकार का व्यवधान ना हो। मानव इसे ही अपने जीवन की संतुष्टि, आवश्यकता तथा अनुभूति मानकर चल रहा है। प्रकृति और मानव की इसी वैचारिक यात्रा के पथ पर अनेक

शोध सार

सृष्टि में जीवन का उत्कर्ष एक अद्भुत तथा विलक्षण घटना है। अब तक की जानकारी, अनुमान, वैज्ञानिक परीक्षण एवं शोधों से यह ज्ञात नहीं हो सकता है कि प्रकृति तथा ब्रह्माण्ड की घटनाएँ ऐसे ही क्यों घटित होती हैं? जैसी हमें परिलक्षित होती हैं। मनुष्य अपनी चिन्तन शक्ति, तर्कशक्ति, रूचि व कल्पना के आधार पर ज्ञान–विज्ञान की शाखाएं बनाता जा रहा है परन्तु वह ऐसा क्यों कर रहा है? इस क्यों का जवाब शायद वह स्वयं भी नहीं जानता है। मनुष्य को जानकारी केवल यह है हम अपने जीवन की सत्ता को सुरक्षित रखें तथा सृष्टि के नियमों में किसी प्रकार का व्यवधान ना हो। मानव इसे ही अपने जीवन की संतुष्टि, आवश्यकता तथा अनुभूति मानकर चल रहा है। प्रकृति और मानव की इसी वैचारिक यात्रा के पथ पर अनेक मान्यताओं, विचारधाराओं तथा दार्शनिक अवधारणाओं का जन्म हुआ। दर्शन के सिद्धान्तों का शिक्षा में व्यावहारिक प्रयोग विगत शताब्दी से शुरू हुआ जो ज्ञान की दिशा में मनोविज्ञान का नवीनतम प्रयास है। आज हमारा राष्ट्र इतना विस्तृत होते हुए भी बहुसंख्यक प्रतिभाएं मुखरित नहीं कर सकता है, जिसका एक प्रमुख कारण समाज को आरक्षित एवं अनारक्षित वर्ग में विभाजित करना हो सकता है। जीवन संतुष्टि न होने के कारण आज हमारी युवा पीढ़ी की शैक्षिक रूचि एवं उपलब्धि अभिप्रेरणा का स्तर निम्न होता जा रहा है। शोधकर्ता ने स्नातक स्तर के आरक्षित एवं अनारक्षित वर्ग के विद्यार्थियों की शैक्षिक रूचि, जीवन संतुष्टि एवं उपलब्धि अभिप्रेरणा को प्रभावित करने में अवरोध उत्पन्न करने वाले कारकों को गहन रूप से जानने हेतु अध्ययन की आवश्यकता महसूस की ताकि हमारे राष्ट्र के आरक्षित एवं अनारक्षित वर्गों के स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की उपलब्धि में अभूतपूर्व योगदान

मिल सके। प्रस्तुत शोध अध्ययन का मुख्य उद्देश्य शासकीय एवं अशासकीय बी. एड. महाविद्यालय के प्रशिक्षार्थियों में शैक्षिक रूचि का तुलनात्मक अध्ययन करना था। इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु रायपुर जिले के 2 शासकीय एवं 2 अशासकीय शिक्षा महाविद्यालयों में अध्ययनरत् 50 महिला प्रशिक्षार्थी तथा 50 पुरूष प्रशिक्षार्थियों का चयन किय गया है। प्रदत्तों के संकलन हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। यादृच्छिक न्यादर्श विधि का प्रयोग करते हुए 100 विद्यार्थियों का चयन शासकीय एवं अशासकीय शिक्षा महाविद्यालय महिला एवं पुरूष लिंग के आधार पर किया गया। प्रस्तुत अध्ययन में डॉ. एस. पी. कुलश्रेष्ठ द्वारा निर्मित शैक्षिक रुचि प्रपत्र का प्रयोग उपकरण के रूप में किया गया है। परिणामों में देखा गया की अशासकीय बी. एड. महाविद्यालयों में अध्ययनरत् बी.एड. प्रशिक्षार्थियों की शैक्षिक रूचि शासकीय बी. एड. महाविद्यालयों में अध्ययनरत् बी.एड. प्रशिक्षार्थियों की अपेक्षा कम पायी गयी।

मुख्य शब्द

सृष्टि, शैक्षिक, तर्कशक्ति.

भूमिका

कई हजार वर्षों तक भारतीय आचार्यों एवं पथ–प्रणेताओं ने इस परम्परा और शिक्षा पद्धति को स्थिर बनाए रखा, परन्तु कालांतर में शिक्षा का रूप बदलने लगा और गुरू–केन्द्रित शिक्षा धीरे–धीरे परिधि की ओर बढ़ने लगी तथा व्यावहारिक दृष्टि से इसका निरूपण होने लगा। गुरू की केन्द्रीय स्थिति में विद्यार्थी अथवा शिष्य आ गया और शिक्षा बाल–केन्द्रित हो गई। इसलिए प्राचीन कालीन मान्यताओं पर प्रश्न चिन्ह लगने लगे। उस समय की पूरी शिक्षा प्रणाली में गुरू का महत्वपूर्ण स्थान था, परन्तु उस समय भी विषय विशेष के सामान्य गुरू होने की परम्परा थी। धीरे–धीरे इस परम्परा में सुधार हुआ और शिक्षा का स्वरूप बदलने लगा। पुरातन शिक्षा प्रणाली के गुरूकुल वर्तमान में विद्यालय एवं महाविद्यालयों मे परिवर्तित होते चले गए और उसी के अनुरूप शिक्षा का स्वरूप भी बदलता गया।

कई वर्षों की गुलामी के बाद 1947 ई. में जब भारत स्वतंत्र हुआ तब अपना पुराना स्वरूप खोया हुआ सा नजर आने लगा। भारत के नागरिकों की स्थिति आर्थिक दृष्टि से अत्यन्त कमजोर होती चली गई। एक बहुत बड़ा वर्ग शिक्षा अर्जित करने की स्थिति में नहीं था। शिक्षा भी उस समय खर्चीली हो चुकी थी। अतः आर्थिक व सामाजिक दृष्टि से गरीब लोगों को ऊपर उठाने के लिए व शैक्षिक दृष्टि से उन्हें आगे बढ़ाने हेतु तत्कालीन राजनेताओं ने आरक्षण का मुद्दा उठाया और भारतीय संविधान के लागू होने के 10 वर्ष बाद तक ऐसे शिक्षा से वंचित लोगों हेतु आरक्षण की सुविधा उपलब्ध कराकर शैक्षिक सुधार लाने का प्रयास किया गया। धीरे–धीरे यह आरक्षण एक राजनैतिक मुद्दा और वोट बटोरने का साधन बन गया और इस आरक्षण को उन 10 वर्षों के बाद भी जारी रखा गया है। ऐसी बात नहीं है कि स्वतंत्रता के बाद भारत में शिक्षा के क्षेत्र में कोई सुधार नहीं हुआ है। प्राथमिक विद्यालय से लेकर महाविद्यालयी स्तर तक शिक्षा में सुधार हेतु विभिन्न प्रकार के शिक्षा आयोग गठित किये गये हैं। इसी संदर्भ में कोठारी शिक्षा आयोग (1964) ने कहा है किः

''यह सत्य ही है कि भारत के भविष्य का निर्माण उसकी कक्षाओं में हो रहा है। भारत की भावी सुरक्षा, कल्याण, समृद्धि एवं सम्पन्नता वास्तव में उन्हीं लोगों पर अवलम्बित है जो हमारे विद्यालयों एवं महाविद्यालयों में अध्ययन कर रहे हैं। किसी समाज या देश का पुनःनिर्माण कर उसको प्रगति एवं उन्नति के पथ पर अग्रसर करने के लिए अति आवश्यक है कि विद्यालय एवं महाविद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास किया जाये। शिक्षा निःसंदेह विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास करने का प्रबलतम साधन है लेकिन वर्तमान में इसके स्वरूप को राष्ट्रीय विकास एवं राष्ट्रीय आकांक्षाओं पर आधारित करने की आवश्यकता है।''

आज शिक्षाशास्त्र, समाज विज्ञान तथा मनोविज्ञान में किए जा रहे शोधों का मुख्य विषय मानवीय त्रासदी से जीवन की सुरक्षा हेतु उपायों पर विचार करना रह गया है, क्योंकि विज्ञान चाहे कितने ही दावे करे कि उसने प्रकृति पर विजय प्राप्त कर ली है परन्तु उनके दावे उस समय पलक झपकते ही खोखले नजर आते हैं, जब सुनामी

जैसी त्रासदी घटित हो जाती है, उस वक्त मन में विचार उठते हैं कि कहां गया विज्ञान? कहाँ गये वे लोग, जो वैज्ञानिक क्रान्ति का दावा करते हैं व मंगल ग्रह पर मनुष्य जीवन को संभव बताते हैं? अगर ऐसा है तो मानव जीवन को ऐसी त्रासदी से क्यों नहीं बचाया जा सकता? क्यों नहीं एक दिन या 2 दिन या 72 घंटे पहले बता देते कि अमुक घटना घटित होने वाली है। अगर ऐसा संभव नहीं हो सकता तो फिर हम कैसे सोच सकते हैं कि मानव ने प्रकृति पर विजय प्राप्त कर ली है। औपचारिक शिक्षा में यही शोध की बातें विद्यार्थी, शिक्षक, समाज, शिक्षण विधि तथा विषयवस्तु पर केन्द्रित हो जाती है।

शिक्षक अपने छात्रों को शिक्षा देकर उसके भविष्य को सुखद तथा निरपवाद बनाना चाहता है। आज का बालक कल की राष्ट्रीय धरोहर है, उसे सुरक्षित करने के लिए प्रत्येक शिक्षक अपने विद्यार्थी के विकास, उन्नति तथा अभ्युदय की कामना करता है। परन्तु आज का विद्यार्थी कल के लिए किस प्रकार तैयार किया जाये, यह जटिल प्रश्न सदा से ही कौतूहल का विषय बना रहा है व बना रहेगा। क्यों शिक्षक व अभिभावक चाहते कुछ हैं, विद्यार्थी बनता कुछ और है, ऐसा क्यों? क्योंकि सभी समानताएँ होने के बावजूद भी विद्यार्थी, अभिभावक व शिक्षक के मनोविज्ञान में अन्तर विद्यमान रहता है। भौतिक, शारीरिक एवं जैविकीय दृष्टि से चाहे हमें मर्यादा समान दिखाई देती हो किन्तु हम मनोवैज्ञानिक पक्षों में समानता ढूंढने अथवा एकरूपता लाने में आज भी असमर्थ हैं। इसका कारण वैयक्तिक भिन्नता का होना है, जिस पर व्यक्ति के व्यक्तित्व, कल्पना, तर्क, भावना, उसका आत्मबोध, सामाजिक वर्ग, शैक्षिक रूचि, जीवन संतुष्टि एवं उपलब्धि अभिप्रेरणा सर्वथा एक दूसरे से भिन्न होते हैं।

प्राचीन भारत तथा आधुनिक भारत पर यदि सूक्ष्मता से दृष्टिपात करें तो हम पाऐंगे कि ''सर्वधर्म समभाव'' की भावना धीरे–धीरे लुप्त होती जा रही है। आरक्षित एवं अनारक्षित वर्ग की परस्पर दूरियाँ बढ़ती जा रही है। जिसके परिणामस्वरूप इन वर्गों के आधार पर सामाजिक संरचना भी प्रभावित हो रही है। वर्तमान सामाजिक जटिलताओं का प्रभाव न केवल बालक अपितु युवा वर्ग पर भी पड़ रहा है। कहा जाता है कि भारत के भविष्य का निर्माण विद्यालय में अध्ययनरत बालकों पर निर्भर करता है परन्तु यही बालक स्नातक स्तर की शिक्षा प्राप्त करने के लिए महाविद्यालय में प्रवेश लेते हैं तो उनकी शैक्षिक रूचि का भी भविष्य पर प्रभाव पड़ता है। महाविद्यालयों में अध्ययनरत स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक रूचि एवं जीवन संतुष्टि का सामाजिक वातावरण पर विभिन्न परिस्थितियों के अनुसार प्रभाव पड़ता है, साथ ही स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा का भी सामाजिक जटिलताओं के साथ सामंजस्य स्थापित करने में महत्वपूर्ण योगदान होता है। विद्यालय स्तर की शिक्षा पूरी कर स्नातक स्तर की शिक्षा अर्जित करने हेतु विद्यार्थी महाविद्यालयों में प्रवेश करता है तो परिस्थितिवश उन्हें अनेक कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है। इस समय विद्यार्थियों को जब दो वर्गों (आरक्षित एवं अनारक्षित) में बांट दिया जाता है तो उनके मन में विभिन्न प्रकार के आवेग आते हैं। उनकी शैक्षिक रूचि प्रभावित होती है।

बी. एड. महाविद्यालय

बी. एड. पाठ्यक्रम एक तरह का भावी शिक्षण प्रशिक्षण हेतु NCTE के द्वारा लागू किया गया है। बी. एड. पाठ्यक्रम के अंतर्गत हम शिक्षा मनोविज्ञान को पढ़ते हैं ताकि हम बच्चों के मनोविज्ञान को समझ सके। इसके अंतर्गत हम तकनीकी शिक्षा का भी विषय के रूप में चुना गया है ताकि हम नये–नये तकनीकी का ज्ञान प्राप्त कर सके और उन तकनीकियों का प्रयोग हम कक्षा शिक्षण में करें जिससे कि बालक का तकनीकी विकास हो सकें। छब्ज्म् द्वारा बी. एड. पाठ्यक्रम के अंतर्गत सूक्ष्म शिक्षण प्रक्रिया होती है जिसके अंतर्गत विभिन्न कौशलों का विकास किया जाता है। जैसे प्रस्तावना कौशल के अंतर्गत किसी प्रकरण तक पहुँचने से पहले उससे संबंधित पूर्व ज्ञान से अवगत कराया जाता है।

व्याख्यान कौशल के अंतर्गत पाठ्यवस्तु के प्रभावशाली प्रस्तुतीकरण के लिए आवश्यक है जिससे शिक्षक समुचित प्रविधियों तथा युक्तियों का प्रयोग करता है और शिक्षण सहायक सामग्री की भी सहायता लेता है। इसे सम्प्रेषण योग्यता भी कह सकते है। दृष्टान्त देना तथा उदाहरणों का प्रयोग पाठ्यवस्तु को स्पष्ट करने के लिए करता है जिससे छात्रों के सीखने में सुगमता प्रदान हो सके। उद्दीपन भिन्नता के अंतर्गत शिक्षक जानबूझकर शिक्षण

क्रियाओं को बदलता है, जिससे छात्रों का ध्यान पाठ्यवस्तु में केन्द्रित किया जा सके। शिक्षक अपनी क्रियाओं को स्वाभाविक रूप से बदलता रहता है जिससे छात्रों के अवधान को आकर्षित करता है।

प्रश्नों की प्रवाह शीलता

शिक्षण काल में पाठ्यवस्तु से संबंधित एक क्रम में शिक्षक जितने अधिक प्रश्न पूछता है, उतनी ही दात्रों की अनुक्रियाओं को अधिक अवसर मिलता है। इसे प्रश्नों का प्रवाहशीलता कौशल कहते हैं।

पुनर्बलन कौशल

छात्रों के व्यवहारों की प्रशंसा करना तथा उनकी अनुक्रियाओं को स्वीकार करना, मान्यता देना आदि से छात्रों को शिक्षण क्रियाओं में भाग लेने के लिए प्रोत्साहन मिलता है इसे पुनर्बलन कौशल की संज्ञा दी जाती है। श्यामपट्ट का उपयोग के अंतर्गत आवश्यक यह होता है कि श्यामपट्ट पर सुलेख लिखना, आकृतियाँ बनाना, जिससे प्रस्तुतीकरण को प्रभावशाली बनाया जा सके। श्यामपट्ट का समुचित प्रयोग हो सके।

दृश्य–श्रव्य सहायक सामग्री का प्रयोग सफलतापूर्वक किया जाता है। शिक्षण को प्रभावशाली बनाने तथा बोधगम्य बनाने में सहायता मिलती है जिससे बच्चों के लिए पाठ रूचिकर बनता है तथा उद्देश्यों की प्राप्ति में सहायता मिलती है। गृहकार्य को देने का कौशल वह कौशल है जो छात्रों को पाठ्यवस्तु की व्यवस्था में सहायता प्रदान करता है। इस प्रकार कौशलों के अध्ययन से एक बेहतर शिक्षक के निर्माता हेतु बी. एड. प्रशिक्षण दिया जाता है।

शैक्षिक रूचि

रुचि हर किसी के जीवन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं क्योंकि वे काफी हद तक यह निर्धारित करते हैं कि कोई क्या करेगा और कितनी अच्छी तरह से करेगा। शेन (1957) के अनुसार, ''रुचि वह है जिससे बच्चा अपने व्यक्तिगत कल्याण की पहचान करता है।'' एक रुचि एक सीखा हुआ मकसद है जो व्यक्ति को एक गतिविधि में खुद को व्यस्त रखने के लिए प्रेरित करता है जब वह यह चुनने के लिए स्वतंत्र होता है कि वह क्या करेगा एक सनक एक अस्थायी हित है, जबकि यह रहता है, यह ब्याज जितना मजबूत, या उससे भी अधिक मजबूत हो सकता है, लेकिन क्योंकि यह केवल अस्थायी संतुष्टि देता है, यह ताकत में बहुत तेजी से कम हो जाता है सच्चा हित अधिक स्थायी होता है क्योंकि वे एक को संतुष्ट करते हैं व्यक्ति के जीवन में आवश्यकता है।

अध्ययन का महत्व

आज का युग अर्थ का युग है और ऐसा कहा भी गया है ''सर्वगुणाः काचनम् आश्रयन्ति'' अर्थात् सोने में सभी गुण निहित होते हैं और आज हम देखते हैं कि यह सत्य भी है। आज सब चीज पैसों की ढ़ेरी पर घूमती हैं। जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति का साधन धन है। एक आरक्षित वर्ग के बालक के जीवन में धन की कमी निश्चित रूप से कई अभावों का सृजन करती है और यही कमी विद्यार्थी की शैक्षिक रूचि, जीवन संतुष्टि एवं उपलब्धि अभिप्रेरणा को प्रभावित भी करती है।

यह अक्षरशः सत्य नहीं है कि अनारक्षित वर्ग के बालकों में ही शैक्षिक रूचि, जीवन संतुष्टि एवं उपलब्धि अभिप्रेरणा पायी जाती है, आरक्षित वर्ग के बालकों में भी शैक्षिक रूचि, जीवन संतुष्टि एवं उपलब्धि अभिप्रेरणा, उच्च स्तर की पायी जाती है। कई बार आरक्षित वर्ग एवं अनारक्षित वर्ग के बालकों की रूचियाँ (शैक्षिक रूचि) भिन्न–भिन्न देखने को मिलती हैं और यही कारण है कि आज का बालक जीवन संतुष्टि के क्षेत्र में, निम्न स्तर को प्रदर्शित करता नजर आ रहा है जिससे बालकों में कलुषित भावनाएँ बढ़ रही हैं। क्या इन सबके लिए समाज दोषी है अथवा मात्र विद्यार्थी ही दोषी है या कोई अन्य कारण है जो बालक की शैक्षिक रूचि, जीवन संतुष्टि एवं उपलब्धि अभिप्रेरणा को प्रभावित करते हैं।

पूर्व में किए गए शोध कार्य

किसी भी शोध विषय के चयन के ऊपरांत यह आवश्यक हो जाता है कि उससे संबंधित शोध समस्याओं के

तथ्य को पूर्व में जो उससे संबंधित शोध कये गये हैं उनके निष्कर्षों एवं समस्या पर ध्यान इंगित करें। किसी भी कार्य के पूर्व में यह जानना आवश्यक हो जाता है कि हम उस विषय या उससे जुड़े अन्य शोध प्रबंध व साहित्य का अध्ययन करें और स्वयं की अन्य शोधकर्ता के विचारों, निष्कर्षों एवं पद्धतियों से परिचित कर लें। इसके लिए यह आवश्यक हो जाता है कि विभिन्न शोधकर्ता व मनोवैज्ञानिकों ने जो पूर्व में कार्य किये हैं उनका अध्ययन किया जाए।

भारत में किए गए शोध अध्ययन

दुबे, रूचि (2007) ने ''स्नातक स्तर के विद्यार्थियों में सांवंवेगिक बौद्धिकता एवं शैक्षिक निष्पत्ति में सम्बन्ध।'' शीर्षक पर पी–एच.डी. स्तरीय शोधकार्य किया। इन्होने शोध में पाया कि स्नात्तक स्तर के कला एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों के सांवेगिक बौद्धिकता एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सह–सम्बन्ध नहीं पाया। केवल एक महत्त्वपूर्ण तथ्य सामने आया कि गणित समूह के विद्यार्थियों सांवेगिक बौद्धिकता एवं कुल प्राप्तांक में सार्थक सह सम्बन्ध पाया गया।

भाटी, राधा (2011) ने ''माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण का उनकी शैक्षिक उपलब्धि तथा शैक्षिक रूचि पर प्रभावों का अध्ययन।'' विषय पर अपना एम.फिल. स्तरीय शोधकार्य करके निष्कर्ष में पाया कि माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों की वाणिज्य, गृहविज्ञान, मानविकी एवं तकनीकी क्षेत्रों में शैक्षिक रूचि माध्यमिक स्तर के गैर–सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों की अपेक्षा श्रेष्ठ पाई गई जबकि गैर–सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों की कृषि, ललित कला एवं विज्ञान क्षेत्रों में शैक्षिक रूचि श्रेष्ठ पाई गई। माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालयों के छात्रों की कृषि, वाणिज्य, ललित कला, गृहविज्ञान, मानविकी एवं तकनीकी क्षेत्रों में शैक्षिक रूचि माध्यमिक स्तर के गैर–सरकारी विद्यालयों के छात्रों की अपेक्षा श्रेष्ठ पाई गई जबकि गैर–सरकारी विद्यालयों के छात्रों की विज्ञान क्षेत्रों में शैक्षिक रूचि श्रेष्ठ पाई गई।

विदेशों में किए गए शोध अध्ययन

शरीफ, एन.वाई (2003) ने ''उच्च एवं निम्न वेतन भोगी के दृष्टिगत अक्षम अध्यापकों के अध्यापन का उनकी शैक्षिक संतुष्टि एवं समायोजन से सम्बन्ध का अध्ययन'' विषय पर शोध कार्य सम्पन्न कर निम्न निष्कर्ष रूप में पाया कि दृष्टिगत रूप से अक्षम अध्यापकों के वेतन का उनके समायोजन एवं शैक्षिक संतुष्टि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

नौता एम.एम. (2004) ने कॉलेज के छात्रों के कैरियर अन्वेषण व्यवहार का अध्ययन किया। छात्र के करियर की खोज के व्यवहार की भविष्यवाणी करने के लिए कैरियर की रुचियों, आत्म–प्रभावकारिता और बड़े पांच व्यक्तित्व आयामों का उपयोग किया गया था। यथार्थवादी, कलात्मक और पारंपरिक रुचियां, कलात्मक आत्म–प्रभावकारिता और खुलापन सकारात्मक रूप से आत्म–अन्वेषण से जुड़े थे। खोजी और उद्यमी हित और बहिर्मुखता आत्म–अन्वेषण के साथ नकारात्मक रूप से जुड़े थे।

समस्या कथन

शासकीय एवं अशासकीय महाविद्यालय में बी. एड. प्रशिक्षार्थियों का शैक्षिक रूचि पर एक अध्ययन।

प्रकार्यात्मक परिभाषा

शाब्दिक रूप से रूचि को 'सम्बन्ध की भावना' कह सकते हैं। हिन्दी में 'रूचि' शब्द अंग्रेजी के 'इन्टरेस्ट' शब्द के लिए प्रयुक्त होता है। अंग्रेजी में 'इन्टरेस्ट' शब्द लेटिन भाषा में 'इन्टरेसी' शब्द से बनाया गया है। लेटिन भाषा शब्द के 'इन्टेरसी' का अर्थ है 'इसके कारण पार्थक्य है।' जो वास्तु पार्थक्य लाती है या जिससे हम सम्बन्धित है वही हमारी रूचि है।

अध्ययन का उद्देश्य

शासकीय एवं अशासकीय बी. एड. महाविद्यालय के प्रशिक्षार्थियों में शैक्षिक रूचि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पना

शासकीय एवं अशासकीय बी. एड. महाविद्यालय के प्रशिक्षार्थियों में शैक्षिक रूचि में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।

अध्ययन की परिसीमा

1. प्रस्तुत अध्ययन हेतु रायपुर शहर का चयन किया गया है।
2. प्रस्तुत अध्ययन हेतु रायपुर जिले के बी. एड. महाविद्यालयों को चयन किया गया है।
3. प्रस्तुत शोध समस्या हेतु रायपुर जिले के 2 शासकीय एवं 2 अशासकीय शिक्षा महाविद्यालयों में अध्ययनरत् महिला एवं पुरूष विद्यार्थियों को शामिल किया गया है।
4. प्रस्तुत अध्ययन में बी.एड. महाविद्यालय से 50 महिला प्रशिक्षार्थी तथा 50 पुरूष प्रशिक्षार्थियों को लिया गया है।

शोध विधि

प्रस्तुत अध्ययन ''शासकीय एवं अशासकीय महाविद्यालय में बी. एड. प्रशिक्षार्थियों का शैक्षिक रूचि पर एक अध्ययन'' में प्रदत्तों के संकलन हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

जनसंख्या

प्रस्तुत शोध के समस्या के अध्ययन हेतु बी. एड. शासकीय एवं अशासकीय शिक्षा महाविद्यालय में अध्ययनरत् महिला एवं पुरूष विद्यार्थियों को जनसंख्या के रूप में परिभाषित किया गया है।

न्यादर्श

प्रस्तुत शोध समस्या के अध्ययन हेतु वर्गीकृत यादृच्छिक न्यादर्श विधि का प्रयोग करते हुए 100 विद्यार्थियों का चयन शासकीय एवं अशासकीय शिक्षा महाविद्यालय महिला एवं पुरूष लिंग के आधार पर किया गया।

चर

(क) स्वतंत्र चर – बी. एड. के विद्यार्थी

(ख) आश्रित चर – शैक्षिक रूचि

उपकरण

प्रस्तुत अध्ययन में शैक्षिक रुचि प्रपत्र डॉ. एस. पी. कुलश्रेष्ठ द्वारा निर्मित है। इस प्रपत्र के माध्यम से विद्यार्थियों की शैक्षिक पसन्द एवं नापसंद के बारे में जानकारी प्राप्त होती है।

सांख्यिकीय विश्लेषण

सांख्यिकीय विश्लेषण शोध कार्यों द्वारा प्राप्त आंकड़ों के सारणीयन के पश्चात् उनका गणितीय विश्लेषण किया गया, इसके लिए मध्यमान, प्रमाप विचलन, प्रमाप विचलन एवं टी परीक्षण किया गया।

परिकल्पना का प्रमापीकरण एवं परिणाम

परिकल्पना क्रमांक 1

शासकीय एवं अशासकीय बी. एड. महाविद्यालय के प्रशिक्षार्थियों में शैक्षिक रूचि में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।

सारणी क्रमांक 01: शासकीय एवं अशासकीय बी. एड. महाविद्यालय के प्रशिक्षार्थियों में शैक्षिक रूचि की संख्या, मध्यमान, प्रमाप विचलन एवं टी मान दर्शाने वाली सारणी

चर	संख्या	माध्य	प्रमाप विचलन	t मूल्य	सार्थकता
शासकीय बी. एड. प्रशिक्षार्थी	50	32.55	5.82	1.86	0.05 स्तर पर सार्थक अंतर पाया गया
अशासकीय बी. एड. प्रशिक्षार्थी	50	31.34	4.30		

df = 98 *0.05 सार्थकता स्तर पर असार्थक

व्याख्या

उपर्युक्त तालिका को देखने से स्पष्ट हो रहा है कि शासकीय बी. एड. महाविद्यालय के महिला–पुरूष प्रशिक्षार्थी एवं अशासकीय बी. एड. महाविद्यालय के महिला–पुरूष प्रशिक्षार्थियों की शैक्षिक रूचि का मध्यमान क्रमशः 32.55 एवं 31.34 तथा मानक विचलन क्रमशः 5.82 एवं 4.30 है। सार्थकता की अंतर के लिए टी मान की गणना की गई जो कि 1.86 है। मुक्तांश 98 तथा 0.05 सार्थकता स्तर पर टी–अनुपात का सारणी मान 1.96 है अर्थात् गणना मूल्य टी–अनुपात सारणी मान से कम है, अतः कहा जा सकता है कि 0.05 सार्थकता स्तर पर शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती हैं।

इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि अशासकीय बी. एड. महाविद्यालयों में अध्ययनरत् बी.एड. प्रशिक्षार्थियों की शैक्षिक रूचि शासकीय बी. एड. महाविद्यालयों में अध्ययनरत् बी.एड. प्रशिक्षार्थियों की अपेक्षा कम पायी गयी।

उपर्युक्त दोनों समूहों के मध्यमान में सार्थक अन्तर पाया गया। इसलिए परिकल्पना नं0 2 ''शासकीय एवं अशासकीय बी. एड. महाविद्यालय के प्रशिक्षार्थियों में शैक्षिक रूचि में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा। '' स्वीकृत की जाती है।

आरेख क्रमांक 01: शासकीय एवं अशासकीय बी. एड. महाविद्यालय के प्रशिक्षार्थियों में शैक्षिक रूचि की संख्या, मध्यमान एवं प्रमाप विचलन ए दर्शाने वाला आरेख

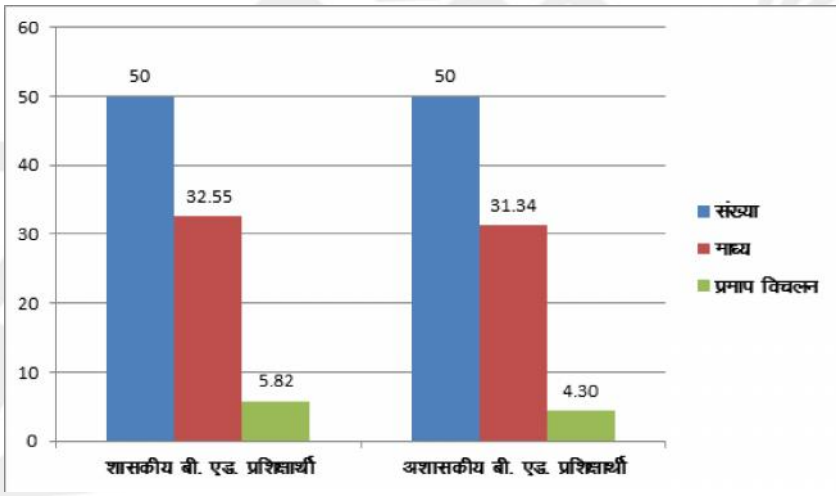

निष्कर्ष

व्याख्या

उपर्युक्त तालिका को देखने से स्पष्ट हो रहा है कि शासकीय बी. एड. महाविद्यालय के महिला–पुरूष प्रशिक्षार्थी एवं अशासकीय बी. एड. महाविद्यालय के महिला–पुरूष प्रशिक्षार्थियों की शैक्षिक रूचि का मध्यमान क्रमशः 32.55 एवं 31.34 तथा मानक विचलन क्रमशः 5.82 एवं 4.30 है। सार्थकता की अंतर के लिए टी मान की गणना की गई जो कि 1.86 है। मुक्तांश 98 तथा 0.05 सार्थकता स्तर पर टी–अनुपात का सारणी मान 1.96 है अर्थात् गणना

मूल्य टी–अनुपात सारणी मान से कम है, अतः कहा जा सकता है कि 0.05 सार्थकता स्तर पर शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती हैं। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि अशासकीय बी. एड. महाविद्यालयों में अध्ययनरत् बी.एड. प्रशिक्षार्थियों की शैक्षिक रूचि शासकीय बी. एड. महाविद्यालयों में अध्ययनरत् बी.एड. प्रशिक्षार्थियों की अपेक्षा कम पायी गयी। उपर्युक्त दोनों समूहों के मध्यमान में सार्थक अन्तर पाया गया। इसलिए परिकल्पना ''शासकीय एवं अशासकीय बी. एड. महाविद्यालय के प्रशिक्षार्थियों में शैक्षिक रूचि में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।'' स्वीकृत की जाती है।

सुझाव

शिक्षकों हेतु सुझाव

1. विद्यार्थियों को अधिकाधिक ऐसे अवसर प्रदान करने चाहिए, जिससे वे परम्परागत चिन्तन से हटकर नये वातावरण में भाग ले सकें।
2. विद्यार्थियों की समस्याओं का समुचित ढ़ंग से समाधान करना चाहिए।
3. शिक्षक समूह का नेतृत्व कर सके एवं माता–पिता के विकल्प के रूप में भूमिका निभा सकें।

प्रशिक्षणार्थियों हेतु सुझाव

1. विद्यार्थियों को स्वस्थ्य प्रतियोगिता की भावना रखनी चाहिए ताकि उनमें उच्च जीवन सन्तुष्टि एवं शैक्षिक रूचि के गुण आ सकें।
2. घर के प्रत्येक कार्य में अनावश्यक सक्रियता दिखाकर पढ़ने के समय का अप्रत्यय नहीं करना चाहिए।
3. नित्य, प्रतिदिन नियमित रूप से अध्ययन करने की आदत बनानी चाहिए।

अभिभावकों हेतु सुझाव

1. अभिभावक अपनी सामर्थ्य के अनुसार बच्चों की आवश्यकता की पूर्ति करें, ताकि आज के युग की मांग को ध्यान में रखते हुए चलें, समाज में आने वाले परिवर्तनों को स्वीकार करें।
2. अभिभावक बच्चों को अनुभवहीन समझकर, उनके निर्णयों की प्रायः उपेक्षा कर देते हैं। अतः अभिभावकों को चाहिए कि वे बालकों की रूचियों व सकारात्मक निर्णयों को स्वीकार करें।
3. अभिभावकों को चाहिए कि वे समय–समय पर अपने बालकों को प्रेरित करें ताकि बालक अकेलापन व द्वन्द्व महसूस न करें।

अनुकरणीय अध्ययन

1. शोधकर्ता ने प्रस्तुत शोध में माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों को न्यादर्श के रूप में लिया है। भावी शोधकर्ता उक्त उच्च माध्यमिक, प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक विद्यार्थियों को भी न्यादर्श के रूप में ले सकते हैं।
2. भावी शोधकर्ता उक्त समस्या के संदर्भ में सरकारी एवं गैर–सरकारी विद्यालयों एवं महाविद्यालयों के विद्यार्थियों को अपने अध्ययन का आधार बना सकते हैं।
3. इस शोध में केवल रायपुर नगर निगम क्षेत्र को सम्मिलित किया गया है। भावी शोधकर्ता इसे अन्य संभागों, राज्य स्तर एवं राष्ट्र स्तर पर भी कर सकता है।
4. इस शोध में केवल शैक्षिक रूचि को सम्मिलित किया गया है। भावी शोधकर्ता अन्य चर सम्मिलित कर सकता है।

संदर्भित सूची

1. मंगल, एस. के (2010) शिक्षा मनोविज्ञान।
2. कपिल, एच. के (1994) अनुसंधान विधियॉ दर प्रसाद भार्गव।

3. आर. ए. शर्मा (2007) शिक्षा अनुसंधान आर लाल बुक डिपो, मेरठ।
4. पाठक पी.डी. (2007) शिक्षा, मनोविज्ञान, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
5. रामपाल सिंह (2008) शैक्षिक अनुसंधान एवं सांख्यिकी, अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा –7।
6. भटनागर सुरेश (2000) शिक्षा मनोविज्ञान, आर लाल बुक डिपो मेरठ 103, मोतीबाजार।
7. ओबराय, एस.सी. (2004). शैक्षिक तथा व्यावसायिक निर्देशन एवं परामर्श, इण्टरनेशनल पब्लिशिंग हाउस, मेरठ।
8. नजीमा, एम.वाई. (2010). इन्फ्लुएंस ऑफ फैमिली फैक्टर्स ऑन रीडिंग हैबिल एंड इंटरेस्ट एमोंग लेवल 2 पीपुल्स इन नेशनल प्राइमरी स्कूल इन मलेशिया, प्रोसेसिं–सोसल एंड बिहेविरल साइंस, 5 1160.1165।
9. पाण्डेय, रजनीश (2020). माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों में शैक्षिक रुचियों तथा शैक्षिक आकांक्षा में सम्बन्ध का अध्ययन, लघु शोध प्रबन्ध, नेहरू ग्राम भारती (मानित विश्वविद्यालय), प्रयागराज।

****